

शक्तिशाली वि. (तत्.) ताकतवर, बलवान, शक्ति संपन्न, शक्तिमान।

शक्तिसंतुलन पुं. (तत्.) 1. परस्पर विरोधी शक्तियों का ऐसा वर्गीकरण जिसमें सभी वर्ग प्रायः समान रहें और एक दूसरे का अहित न कर सके 2. अंतर्राष्ट्रीय यथास्थिति बनाए रखने की नीति।

शक्तिसंपन्न पुं. (तत्.) शक्तिशाली, ताकतवर, बलशाली, बलवान।

शक्तिसंयंत्र पुं. (तत्.) जिस संयंत्र से विद्युत उत्पन्न की जाए।

शक्तिहीन वि. (तत्.) शक्ति रहित, निर्बल, कमजोर।

शक्ती स्त्री. (तत्.) अठारह मात्राओं के एक मात्रिक छंद का नाम, जिसके आदि में लघु और अंत में सगण, रगण या नगण होता है, इसकी पहली, छठी, ग्यारहवीं और सोलहवीं मात्रा सदैव लघु होती है।

शक्तुक पुं. (तत्.) एक विष।

शक्नु वि. (तत्.) प्रिय बोलने वाला, मधुरभाषी।

शक्य वि. (तत्.) 1. क्रियात्मक रूप में हो सकने योग्य 2. संभव 3. करने में सरल।

शक्यता स्त्री. (तत्.) क्रियात्मक होने का भाव।

शक्यार्थ पुं. (तत्.) शब्द की अभिधा शक्ति से जाना गया अर्थ, प्रत्यक्ष अभिहितार्थ।

शक्र पुं. (तत्.) 1. इंद्र 2. शिव 3. ज्येष्ठा नामक नक्षत्र 4. अर्जुन वृक्ष 5. उल्लू 6. चौदह की संख्या।

शक्रकार्मुक पुं. (तत्.) इंद्रधनुष।

शक्रकाष्ठा स्त्री. (तत्.) पूर्व दिशा।

शक्रगोप पुं. (तत्.) 1. इंद्रगोप 2. एक कीड़ा जो लाल एवं मखमली होता है।

शक्रचाप पुं. (तत्.) दे. शक्रकार्मुक।

शक्रज पुं. (तत्.) कौआ।

शक्रजा स्त्री. (तत्.) इनारुन लता।

शक्रजाल पुं. (तत्.) इंद्रजाल।

शक्रजित पुं. (तत्.) मेघनाद, इंद्र पर विजय प्राप्त करने वाला।

शक्रदंती पुं. (तत्.) ऐरावत।

शक्रदारु पुं. (तत्.) देवदारु।

शक्रारि पुं. (तत्.) 1. इन्द्र का शत्रु, मेघनाद 2. वृत्रासुर।

शक्राशन पुं. (तत्.) 1. कुटज 2. भौंग, विजया।

शक्रासन पुं. (तत्.) इंद्र का आसन, इंद्रासन, स्वर्ग का राजसिंहासन।

शक्रि पुं. (तत्.) 1. वज्र 2. हाथी 3. पर्वत 4. बादल।

शक्रोत्सव पुं. (तत्.) इंद्रध्वज नामक एक प्राचीन उत्सव।

शकल स्त्री. (अर.) दे. शकल।

शक्वर पुं. (तत्.) वृष, शैल।

शक्वरी स्त्री. (तत्.) 1. गाय 2. उँगली 3. मेखला।

शखनारी स्त्री. (तत्.) एक वर्णवृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण हो, दूसरा नाम-सोमराजी।

शख्य वि. (तत्.) 1. तीर का निशाना बनने वाले व्यक्ति, तीर का लक्ष्य उदा. शख्य तक जाने दो- दिनकर (रश्मि. सर्ग.7) 2. धनुर्धर, तीरंदाज।

शख्स पुं. (अर.) मनुष्य, व्यक्ति, आदमी, जन, समारोह।

शखिसयत स्त्री. (अर.) वैयक्तिक विशेषताएँ, व्यक्तित्व।

शखसी वि. (अर.) 1. वैयक्तिक, मनुष्य/आदमी, शख्स का 2. व्यक्तिगत, निजी।

शगल पुं. (अर.) 1. रुचिकर काम, धंधा, खाली समय बिताने के लिए या मन बहलाने के लिए किया गया रुचिकर काम, मनोविनोद 2. भगवान का ध्यान।

शगुन पुं. (तद्.) दे. शकुन।